Volume-4, No. I, Feb-2017, pp. Hin.-08-10

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रवि कुमार, सहायक प्रोफैसर
श्री बालाजी एकेडमी, मुरादाबाद उ.प्र. भारत।

सार

शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है। शिक्षा प्राप्त करके ही मानव श्रेष्ठ बन सकता है। हमारे देश में ही प्राचीन काल से ही शिक्षा प्राप्त करने की परम्परा रही है। भारतीय दर्शनों में ज्ञान शब्द वही अर्थ रखता है जो कि व्यापक अर्थों में शिक्षा का होता है। ज्ञान तत्वों के मूल्यों को समझने में समर्थ बनाता है। भारतीय दर्शनों में केवल सूचना अथवा तत्वों के लिए ज्ञान शब्द का प्रयोग नहीं होता। अमर कोश में ज्ञान तथा विज्ञान शब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है कि ज्ञान का विषय मुक्ति है जबकि विज्ञान का शिल्प और विविध शास्त्र। दूसरे शब्दों में ज्ञान वह है जो मनुष्य को उन्नत करता है जबकि व्यवहारिक जीवन में प्रयोग के लिए जो कुछ जाना जाता है अथवा सीखा जाता है, वह विज्ञान कहलाता है।

मुख्य शब्द– प्रस्तावना, सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, सर्वशिक्षा अभियान, अभिवृत्ति, न्यादर्श, शोध विधि, आंकड़ों का संकलन, शोध के उद्देश्य

प्रस्तावना–शिक्षा किसी न किसी रूप में एक शिशु का सर्वागींण विकास करके उसको अपने जीवन में विभिन्न कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को निर्वाह करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार करती है। शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है। प्राथमिक शिक्षा ही शिक्षा की नींव है। समाज में प्रौढ़ साक्षरता लाने में जितना प्रभाव प्रारंभिक शिक्षा का है उतना शिक्षा के अन्य किसी स्तर का नहीं है। हंर्टाग समिति की रिपोर्ट में प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि प्राथमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जन साधारण का प्रसार करना ताकि मताधिकार का उचित रूप से उपयोग करना सिखाना है। व्यक्ति का विकास शिक्षा के द्वारा होता है उसके विकास के लिए यह आवश्यक है कि देश की शिक्षा उसकी आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार हो।

स्वतंत्रता के पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयास किये किन्तु इन प्रयासों के पीछे शिक्षा के विस्तार की भावना कम तथा धर्म प्रचार की भावना अधिक थी। सन् 1813 में सर्वप्रथम ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा अपने आज्ञा पत्र के अनुसार भारतीयों की शिक्षा की व्यवस्था की गई लेकिन यथार्थ में कुछ नहीं हुआ।

सन् 1822 में भारत के गवर्नर सर मुनरों ने प्राथमिक शिक्षा हेतु एक सर्वेक्षण कराया। 1835 में लार्ड मैकाले ने अपनी बनाई शिक्षा नीति द्वारा भारत में प्राथमिक स्तर पर ब्रिटेन की शिक्षा प्रणाली अपनाने का प्रयास किया। सन् 1852 में बम्बई प्रांत में राजस्व सर्वेक्षण कमिश्नर कैप्टन ब्रिगेट ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए सरकार को राजस्व 50 प्रतिशत कर लगाने का सुझाव दिया। इसी प्रकार सन् 1858 में गुजरात के शिक्षा निरीक्षक टी0सी0 होय ने स्थानीय कर लगाकर प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयास किया था।

हण्टर आयोग द्वारा सन् 1882 में शिक्षा के प्रसार हेतु सिफारिश की गयी। देश में स्कूलों को प्रोत्साहन दिया जायें एवं सामान्य वर्गों की शिक्षा में देशज भाषाओं का प्रयोग किया जाये। इन सिफारिशों के परिणाम स्वरूप प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में विलक्षण रूप से प्रगति हुई। सन् 1882 में स्कूलों की संख्या 82916 थी जो कि सन् 1901–1902 में बढ़कर 98538 हो गई। स्वतंत्र भारत में प्राथमिक शिक्षा 1947 से अब तक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत वर्ष में बालक एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा को राज्य का एक नीति निर्देशक सिद्धांत घोषित किया, और 2010 में प्राथमिक शिक्षा को मूल अधिकार बना लिया गया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

प्रस्तुत विषय पर निम्नलिखित विद्यार्थियों ने कार्य किया है। जिसमें शर्मा सपना (2005), वर्मा सुरेन्द्र (2006), कुमार ललित (2012), प्रसाद नरेश (2014) एवं चन्द्र जगदीश का सर्वशिक्षा अभियान से सम्बन्धित कार्य किया है।

समस्या कथन–प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

शब्दों का परिभाषिकरण –

सर्वशिक्षा अभियान– सर्वशिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमुख कार्यक्रम है। इसका प्रमुख उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के सारभौमिकरण को प्राप्त करना तथा संतोष जनक गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा को भी प्राप्त करना है। इसका प्रारम्भ 2001 में केन्द्र सरकार 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए किया गया गया है। वर्तमान समय में इसको माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया है।

अभिवृत्ति– यह मनुष्य की सामान्य प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा वस्तु का मनोवैज्ञानिक ज्ञान होता है। इसी आधार पर व्यक्ति वस्तुओं का मूल्यांकन करता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अभिवृत्ति मनुष्य की वह अवस्था माना है जिसके द्वारा मानसिक तथा नाड़ी सम्बन्धि अनुभवों का ज्ञान होता है।

न्यादर्श– 100 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग, जाति, धर्म एवं क्षेत्र में वर्गीकृत किया जायेगा।

शोध विधि – सर्वेक्षण विधि

उपकरण–सर्वशिक्षा अभियान अभिवृत्ति मापनी

आंकड़ों का संकलन – मुरादाबाद जिले के प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं उनके परिवार से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली को पूर्ण किया जायेगा एवं आंकड़ों को एकत्रित किया जायेगा।

शोध के उद्देश्य –

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की क्षेत्र के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
3. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की धर्म के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
4. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की जाति के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएं –

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की क्षेत्र के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की धर्म के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की जाति के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी संख्या– 1

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का सर्वशिक्षा अभियान के प्रति मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्राश संख्या	टी–मान
छात्र	25	15.30	2.31	48	7.74
छात्रायें	25	14.54	2.35		

सारणी संख्या 1 में प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15. 30 (2.31) जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.54 (2.35) प्राप्त हुआ है। 48 स्वतंत्राश संख्या पर 7.74 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक मूल्य सार्थकता स्तर से अधिक है जो सर्व शिक्षा अभियान की अभिवृत्ति के सम्बन्ध में दोनों समूहों के मध्य सार्थक को दर्शाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या–2

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों (ग्रामीण व शहरी) का सर्वशिक्षा अभियान के प्रति मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्राश संख्या	टी–मान
ग्रामीण विद्यार्थी	25	15.48	2.23	48	2.12
शहरी विद्यार्थी	25	15.70	2.41		

सारणी संख्या 2 में प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15. 48 (2.23) जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15.70 (2.41) प्राप्त हुआ है। 48 स्वतंत्राश संख्या पर 2.12 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक मूल्य सार्थकता स्तर से अधिक है

जो सर्व शिक्षा अभियान की अभिवृत्ति के सम्बन्ध में दोनों समूहों के मध्य सार्थक को दर्शाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है।

उद्देश्य क्रमंक 3– प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की धर्म के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना क्रमांक 3–प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की धर्म के आधार पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी संख्या– 3

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों (हिन्दू व मुस्लिम) का सर्वशिक्षा अभियान के प्रति मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्राश संख्या	टी–मान
हिन्दु विद्यार्थी	25	18.35	2.80	48	1.334
मुस्लिम विद्यार्थी	25	17.70	3.00		

सारणी संख्या 3 में प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 18. 35 (2.80) जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 17.70 (3.00) प्राप्त हुआ है। 48 स्वतंत्राश संख्या पर 1.334 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक मूल्य सार्थकता स्तर से अधिक है जो सर्व शिक्षा अभियान की अभिवृत्ति के सम्बन्ध में दोनों समूहों के मध्य सार्थक को दर्शाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या–4

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों (एस0सी0 व ओ0बी0सी0) का सर्वशिक्षा अभियान के प्रति मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या–

न्यादर्श	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्राश संख्या	टी–मान
अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	25	13.75	2.40	48	2.67
पिछडी जाति के विद्यार्थी	25	14.27	2.42		

सारणी संख्या 4 में प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की सर्वशिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 13. 75 (2.40) जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.27 (2.42) प्राप्त हुआ है। 48 स्वतंत्राश संख्या पर 2.67 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक मूल्य सार्थकता स्तर से अधिक है जो सर्व शिक्षा अभियान की अभिवृत्ति के सम्बन्ध में दोनों समूहों के मध्य सार्थक को दर्शाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष–

1. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
5. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग की छात्राओं एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एडलर ए० द, ऐजुकेशन ऑफ चिल्ड्रन, लाल बुक डिपो मेरठ।
2. गुप्ता एस०पी०, शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।
3. युग किबंल, शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. शर्मा आर०, चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।
5. जोसेफ आर०ए०, विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन प्रकाशन करौंदी, बनारस।
6. प्रसाद प्रो० चौबे, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक, आगरा।
7. अरोड़ा रीता, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. कपिल एच.के., अनुसंधान विधियाँ –भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।
9. गुप्त रामबाबू, भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा 1996।
10. रमन बिहारी लाल, शक्षा दर्शन रस्तोगी पब्लिकेशन, तृतीय संशोधित, संस्करण 1975।